भारत त्राता-महर्षि दयानन्द

अर्थात

गुरु-दक्षिणा-नाटक



लेखक—

श्री डा० ज्ञानचन्द्र जी 'आर्य सेवक'

प्रकाशक

ललित प्रकाशन मण्डल

प्रथम बार] विक्रमी सं० २००६ [मूल्य =)

ओ३म्

निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक एकांकी नाटक के रूप में श्री डा० ज्ञान चंद्र जी ने लिख कर तैयार की। इस को आर्य जनता के लिये रुचिकर जानकर प्रकाशित किया गया है। ऋषि के प्रति डा० जी की जो आस्था है उसका परिचय इस छोटी सी पुस्तक से प्राप्त होता है। इसी प्रकार डा० जी ने "देव दयानन्द दर्शन" में ऋषि के जीवन की घटनाओं को अंकित किया है। उसका भी प्रकाशन हो गया है।

पञ्च महा यज्ञ व्याख्या—इस पुस्तक को भी डा० जी ने बड़ी रुचिकर और सुन्दर रूप से लिखा है। इस विषय को प्रायः शुष्क ही समझा जाता है परन्तु इस पुस्तक को पढ़ने पर ज्ञात होता है कि इसमें कितना आकर्षण । इस छोटी सी पुस्तक की भूमिका स्वर्गीय श्री स्वामी केवलानन्द जी महाराज ने लिखी है जिसमें उन्होंने डा० जी की आर्य समाज के प्रति अनन्य भक्ति का वर्णन करते हुऐ आर्य जनता को ऐसे चुपचाप शान्त कार्य कर्ताओं के प्रति कर्तव्य का पथ प्रदर्शन किया है, प्रकाशित हो रही है।

संध्यालोक-- (ले० श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ)

प्रभु कीर्तन---सन्तोपदेश--(ले ०श्री स्वामी केशवानन्द जी)

श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज आर्य समाज के वह पुराने गायनाचार्य हैं जो कभी पं० अमीचन्द्र के नाम से प्रख्यात रहे हैं, जिनका भजन 'योगी ने नाद बजाया' बड़ा प्रसिद्ध रहा। आपने इस छोटे से गुटके को ओ३म् नाम की रसना भरी माला में पिरो दियाहै। मुल्य ।) आना

ॐ

भारत त्राता--महर्षि दयानन्द

गुरु-दक्षिणा-नाटक

स्थान एक मन्दिर—

(बालक बालिकाएँ भारत माता के गुण गा रहे हैं)

यह देश कितना महान था
सोने की यह तो कान था
यहां जो भी था वह जवान था,
यहां जो भी था विद्वान था
जिसे देखा सूरमा था बलवान था

(नारद का प्रवेश)

अपने एक तारे पर गाते हुवे—

भज मन प्रभु चरण सुखदाई।
भज मन ओ३म् नाम सुखदाई॥
प्रभु के प्रताप को जो जन जाने।
और आवे तिस शरणाई॥
भज मन ओ३म् नाम सुखदाई

(बालकों को देखकर) कहो बालको क्या धुन समाई है, भारत मां के बीते समय को याद कर कर उसके गुण गा रहे हो,

और आज के समय को क्यों भुला रहे हो; वह देखो (पटाखा)
(भारत माता का जन्जीरों में बन्धे हुवे खड़े नज़र आना)

नारद—

वह स्वतंत्र थी कभी, पर आज तो पांवों में बेड़ी पड़ी है ॥
कहां है स्वतंत्रता उसकी, कहां वह उसकी शान है।
कहां है वह सौंदर्य उसका कहां वह उसका मान है ॥
पहिली सी सूरत रही नहीं, और नहीं पहिला सा कोई निशान है।
हां यह हडियां सी दीख रही हैं, और शेष नीम जान है ॥
वह देखो तो नेत्रों से उसके, जल धारा बह रही है।
त्रिषत नेत्रों से देखती है, और तुम को कुछ कह रही है ॥

आवो बालको आगे बढ़ो-सुनो, उसके आर्त नाद को सुनो, वह कुछ बोल तो रही है;

बालक—पर मुनिवर कुछ सुनाई तो नहीं देता उसके होंट फड़क तो रहे हैं, पर उनकी बानी से क्या निकला, सुनाई और दिखाई नही देता

(बालको का आगे बढ़ना)

(भारत माता जन्जीरों में बन्धी हुई कह रही है)

(१) मैं क्या थी क्या हो गई, और क्या हूंगी अभी।
था पता क्या कोट तैंतीस की जननी बांझ भी होगी कभी ॥
(२) जिन शूरवीरों को था किया पैदा मैं ने यहां।
दीखते अब वह नहीं, नहीं पता वह गये कहां ॥
(३) मेरी भूमि थी उपजाऊ यह, और हर जन को संतोष था।
खाने पीने की न थी कमी, इससे देश में न रोश था ॥

(४) मेरी गौवें थी यहां पर, जो सदा पिलाती दुग्ध थी।
अमृत देती थी हमें, जातियां विश्व की सब मुग्ध थी॥

(५) वह धेनुवें प्रत्येक गृह में दोही जाती थीं सर्वदा।
शक्ति भरी दुग्ध नहरें, बहती सर्वत्र थीं वह सर्वदा॥

(६) घृत आदि की अधिकता थी, बल वीर्य का विकास था,
आज कल की भान्ति न कदापि रोग का यहां निवास था॥

(७) उस समय गौ वंश पलता था, और आज मरता है यहां।
क्या तुलना हो आज की और पहली भारत की मही॥

(८) निर्मल पवन हो हवन से और शिखर तक सुगंधित हो उठीं,
वायु जल सुखदाई होते, और खेती भी लहरा उठीं॥

(९) विश्व का गौरव और प्रकृति की पुण्य लीला देखने को है कहां,
कितना सुन्दर था मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल यहां

(१०) सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उतकर्ष था।
तपो मय-ऋषि भूमि का, वह कौन भारतवर्ष था॥

(११) हां बूढ़ा भारत वर्ष ही संसार का शिर मौर था।
ऐसा पुरातन देश कोई जगत में न और था॥

(१२) भगवान की विभूतियों का यही तो प्रथम भंडार था।
प्रभू ने भी नर सृष्टि का किया पहिले यहां विस्तार था॥

(१३) यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध थी इसके निवासी आर्य थे।
विद्या कला कौशल के वह सबसे पहिले आचार्य थे॥

(१४) उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन महान है अपार है।
मैं तो कुछ कह पाती नहीं, गुण गा रहा संसार है॥

१५) एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्र जन्मनः।

एवं एवं चरित्रं शिक्षे रन्पृथिव्यां सर्वं मानवाः॥

नारद—मातेश्वरी। यह विलाप कैसा? कष्ट और कलाप कैसा? तेरा गला क्यों रुंध रहा है तेरा कंठ क्यो भर रहा है। आज इतनी दुःखी क्यों हो रही हो।

भारत माता---बेटा नारद देखता नहीं आज मेरी इस पुण्य भूमि भारत में क्या हो रहा है - मानवता के नाम पर पशुता, वह देखो,

(पटाक्षा होना)

(स्थान एक वाटिका-स्थान २ पर नर नारियों के समूह, कोई खड़े और कोई बैठे, परस्पर बातें कर रहे हैं, किसी किसी जगह पर गुल गपाड़ा मच रहा है। कुछ आदमियों का एक टोला पं० अवनाशी राम ज्योतिषी आदि २।)

बुधवा—

जवानी है मस्तानी हमें मोज उड़ानी है।
मुड़ कर नहीं यह आनी रंग रलियां मनानी है॥

सुधुवा—

जरा देख इधर क्या होता है।
वह यार हमारा रोता है॥

(बुधवा का जार २ रोना)

दोनों—

अरे क्यों बुद्धू तुझे क्या होता है।

बुधवा—

अरे यार मेरी बहु कहती है
मैं तो चल बसी, यह कितनी है बे बसी।

पं० अवनाशी राम—

देखो बुद्धु तुम्हारी जन्म कुन्डली में लिखा है,
तुम्हारी बहु का मर जाना सरासर नादानी है।
तुम्हारी बहु क्या है वह तो भैरों की नानी है॥

भैरों—

मेरी नानी, यह क्या शैतानी, नादानी, हैरानी, परेशानी

अवनाशी—

देखो भैया, पिला दो भंग जमा दो रंग-यह फिर समय नहीं आना,

सधुवा—

अरे भैया, खेलो ताश लगी है आश, हमें फिर चले है जाना

उधुवा—

अरे भैया, बोतल रंग बिरंगी, इसे लाया था फरंगी बिन पिये पड़े पछताना

बुधवा—

अरे भैया, आवो खेलें जूवा, कहती थी मेरी बुआ, बिन खेले पड़े नही चेना,

भैरों—

अरे भैया, यह चोसर कैसा खेल, हुवा दो मोहरो का मेल इन्हें अब कैसे है चलाना।

(बाबा प्रेम नाथ का गाते हुवे प्रवेश)
आगे पीछे स्त्री पुरषों की भीड़

गाना—

संसार निराधार है, यहां रहना किसे दरकार है।
यह क्यों हुवा विस्तार है, नही इसमें कोई सार है॥
तुझे हुवा क्यों प्यार है, न कोई यार व मददगार है।

सब स्त्री पुरुष—

वाह, वाह, जय हो, श्री बाबा जी की जय हो।

(इन्दिरा देवी का दुखी अवस्था में विलाप करते हुवे आना)

प्रभु उठा ले, इस धरती पर से उठा ले, सास के ताने, नन्द की गालियां, देवर और देवरानी का दुर्व्यवहार क्या कुछ कम था उस पर आज का पड़ोसियों का यह भयानक दुराचार, बस अब जीवन को ही मिटा दे, गंगा मैया तू मुझे अपने निर्मल जल में समा ले, विधवा को जीना शास्त्र विरुद्ध है और यही तो प० जी ने कथा में बताया था न, तिस पर प्रभु तूने रूप भी प्रदान किया है यह संसार क्या इस योग्य है कि अभागी और रूपवती विधवा यहां जिवित रहे, नहीं कदापि नहीं, चल चल गंगा की गोद में चल, यह लो, एक अनाथ भी रुदन कर रहा है इसको भी कोई आश्रय नहीं, जाति में कोई ऐसा दिखाई नहीं देता जो उसकी रक्षा करे और मैं स्वयं निराश्रत हु (बालक से) बच्चे तू क्यों रोता है।

बालक—

मैं अनाथ हु और मेरी जाति मुझे इस अवस्था में पास बिठाना पाप मानती है, दुर्दैव से मेरी मां नहीं मेरा बाप

नहीं, मुझे कोई रोटी का सहारा नहीं देता, गंगा मैया के पास आया हूँ ताकि इसमें समा जाऊं। (दोनों का आगे बढ़ना)

(पं० किरन शास्त्री कथा वाचक कथा बांच रहे हैं)

एको ब्रह्म दुतियो नास्ती, नाना प्रकार कर कर के जो जीव हैं सो ब्रह्म है ब्रह्म ही जीव है, जीव ही ब्रह्म है, भक्त जनों में तो वह आप ही बास करता है।

ब्रह्मानन्द—महाराज भगवान विष्णु ने कौन कौन अवतार धारण किये हैं।

किरन शास्त्री—कोई पचीस तीस—हैं सो कर करके, मोहनी अवतार, कृसण अवतार, बराह अवतार, मछ अवतार, कछ अवतार, रामा अवतार, गणेश अवतार, आदि २ अनेक अवतार हैं।

ब्रह्म—सतबचन महाराज, यह बराह अवतार की ही कथा कह रहे थे राधे श्याम महाराज, सुन करके चित आनिन्दत हो गया महाराज, भगवान ने अनेक रूप धारण किये हैं कल को वामन अवतार की कथा कहेंगे; बड़े प्रेम से कथा कहते हैं।

एक श्रोता—महाराज भगवान जब अवतार लेवें हैं तो वह बड़ा कष्ट पावत हैं गर्भ में रहने का, यह नो मास तो उन को महान नर्क में रहना पड़ता होगा।

दूसरा—छी छी छी नारायण नारायण, भगवान के कार्यों में दखल देते हो, उनकी लीला अपार है, उन्हें नरक नरक कुछ नहीं वह तो निर्लेप हैं, बेद में तो लिखा है वह तो आजन्मा हैं।

(एक शराबी का प्रवेश)

शराबी—मैं तो देख रहा हुं नारायण मैं तो देख रहा हुं वह तो हमारे शराब खाने में ही रहते हैं, जब कभी दयाल होते हैं तो दो प्याली अधिक पिलाते हैं।

एक लाला—सट्टे के भाव ताव का हेर फेर यह कैसा अन्धेर, हमने तो सारा धन्धा इसी पर ही फैला रक्खा है अनाजऔर कपड़ा सब छुपा रखा है, सरकार समझती है कि हमस्याने, किसे पता है दारोगा जी हैं काने, हमारे पैसे में दम है तो फिर काहे का ग़म है।

दूसरा लाला—भाई साहिब हमने तो केवल चीनी ही इधर उधर की थी, किसे खबर थी कि हर वस्तु का बाजार ही युं बेकरार कर देगा, जो भी छुपा सको छुपाओ वह पेट भर देगा।

नवीनवेदान्ती—अहं ब्रह्मास्मी मैं ब्रह्म हुं तुम ब्रह्म, सब ब्रह्म ही ब्रह्म हैं।

एक मन मौजी—एथे रहना नहीं मत खरमस्तीयां कर।

दूसरा—जग मेला है दो दिना का।

तीसरा—भाई मौज फकीर की दिया झोंपड़ा फूंक।

चौथा—बूलिया तू क्यों भूलया तेरा नहीं गुजारा।

पांचवा—कबीरा तेरी झोंपड़ी गल कट्यां दे पास, करेंगे सो भरेंगे तू क्यों भयो उदास।

छटा—रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम।

सातवां—ईश्वर अल्ला तेरा नाम सबको सम्मति दे भगवान।

आठवां—हम तो राधा के स्वामी का जाप करेंगे।

नवां—आगा खां हमारे पाप हरेंगे।

दसवां—जय सीताराम भई जय सीताराम।

गयारवां—शिव-शिव-राधे श्याम कहो भाई कहो राधेश्याम,

बारहवां—जय भोले महादेव बम भोले शिव शम्भु, लगा दे लम्बु, तान दे तम्बु।

तेरहवां—घोटी घुटाई थिवे ने मुरदा भी उठ पिवे।

चलो भाई लगा दो रगड़ा मिटा दो झगड़ा।

चौदहवां—जय लाटां वाली तेरी सदा ही जय।

पन्द्रहवां—बोल बजरंग बली की जय;

जग में सिवाये बजरंग के और कोई न है।

सोलहवां—जय काली कलकत्ते वाली, मैंने एक भैंसा तेरी भेंट चढ़ाने के लिये ही पाला है।

सताहरवां—आज भैरवी चक्कर का दिन है, गुरु जी पधारने वाले हैं, बस आज तो हमारे पुराने इशारे सफल होने वाले हैं, गुरु जी की कृपा की देर है, बस फिर मदिरा के प्याले, और वह होंगी हमारे हवाले।

भारत माता—बेटा नारद ! देखा-यह सब कुछ जो हो रहा हैं, और तुम कह रहे हो कि मैं रोती क्यों हूँ

नारद—मातेश्वरी यह तो ठीक है परन्तु वह देखो तो सही तुम्हारा सपुत्र क्या कह रहा है।

कृष्ण—यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्
माता तुझे नमस्कार हो।

भारत माता—प्रिय पुत्र तुम-तुम आये हो मैं तो तुम्हें ही याद कर रही थी।

कृष्ण--मातेश्वरी आपने स्मरण किया तो मैं भी दौड़ा चला आया हुं, पर आप इतनी निराश क्यों ? हताश क्यों ?

भारत माता—प्रिय पुत्र !

यहां निशा ने अपना राज जमा रक्खा है।
मूर्खता ने अपना साज सजा रक्खा है॥
अंधेरी रात है बन आई चोरों की चकारों की।
सम्पदा लुट रही है धर्मी जन बेचारों की॥

इस लिये पुत्र—

क्या अवस्था यह सारी तुझे भी सुनानी पड़ेगी।
जो बीती है मुझ पर सभी कुछ बतानी पड़ेगी॥

कृष्ण—नहीं मातेश्वरी नहीं,

मैं अवस्था यहां की सभी जानता हुं।
दुखी आप क्यों हैं यह भी मानता हुं॥

तो बस माता अब दुखी होने का समय जाता रहा, तेरे कष्टों की जो काली और अन्धेरी रात थी वह बिदा होने वाली है, और वैदिक भानु की दिव्य ज्योति चमकने वाली है,

क्योंकि जब सताया धर्म जाता है।
देश से जब मिटाया कर्म जाता है॥
सत्य है यह फिर उभारा धर्म जाता है।
तब उद्धारक पुरुष कोई दृढ़ कर्म आता है॥

वह देखो सामने किसी महा पुरुष की आवाज आ रही है।

पटाखा

(पट परिवर्तन)

(स्थान मथुरा में दण्डी बृजानन्द की ड्योढ़ी)

(बृजानन्द अपने आसन पर विराजमान, दयानन्द सामने एक थाली में लौंग लिये खड़ा है, दिक्षान्त संस्कार का समय)

बृजानन्द—दयानन्द।

दयानन्द—पुज्य गुरु जी।

बृजानन्द—दयानन्द आज तुम्हारा दिक्षान्त संस्कार है जानते हो? आज गुरु आज्ञा का पालन और दक्षिणा देने का दिन है।

दयानन्द—जी गुरु जी।

बृजानन्द—तो आओ आगे बढ़ो,

दयानन्द—(आगे बढ़ कर शीश झुकाकर) पुज्य गुरु देव, आज समावर्तन का दिन है, पूर्वजों के नियमानुकूल

गुरु चरणों मे भेंट चढाना सौभाग्य होता है।
इस दक्षिणा से शिष्य का बेड़ा पार होता है॥
गुरु का ऋण है ऐसा जो उतारा जा नहीं सकता।
बिना ऋण उतारे जीवन भी सुधारा जा नहीं सकता॥
कृपायें आपकी लाखों मुझ पर सदा रहती।
पढ़ो वेद विद्या दयानन्द-ऐसा वह सदा कहती —
गुरु जी।

मेरे पास और तो कुछ था नहीं यह लोंग चार लाया हूं
इसी को स्वीकार कर लीजे, जो मैं ले के आया हूं

पूजनीय, श्रद्धा और सम्मान के योग्य गुरु जी, यह लोंग की थाली श्री चरणों में भेंट चढ़ाता हूं। मैं निर्धन और निराधार हुं पर आपकी परम प्रिय वस्तु आपके अर्पण है।

वृजानन्द—लोंग-क्या कहा लोंग, दयानन्द मैंने तुझे अपनी आंखों का सहारा जाना था, इसीलिये तो तुझे सब से अधिक ताड़ना और लाड़ मे पाला था।

संसार में अन्धकार छा रहा है, और तू लोंगें देकर विदा हो रहा है। दयानन्द देखता नही ?

प्रभु को यह संसार मारा भुला रहा है।
वेद के ज्ञान को छोड़ कहीं दूर जा रहा है॥

मैं तो इस आशा में था कि मेरे चार शिष्य हैं चारों दिशाओं में भेज कर संसार का उद्धार कराऊंगा, मेरे नेत्रों में यद्यपि ज्योति नहीं है पर मैं तुम्हारे ही नेत्रों की ज्योति से रोशन हो जाऊंगा, तुम तो मेरी ज्योति हो, मैं यही आशायें लगाये बैठा था क्या यह फूलें और फलेंगी नहीं, और मेरी इच्छाओं का विघात होगा और भारत वर्ष का सर्व नाश होगा भारत का भाग्य सो रहा है, और नित्य प्रति अधिक सोता जा रहा है, ऐसी अवस्था में प्रिय वत्स दयानन्द, क्या तुम अपने स्वार्थ का विचार न छोड़ सकोगे, योग समाधी मे तुम अपने मार्ग को तो पूरा कर सकते हो, पर सँसार का उपकार न हो सकेगा, तुम्हारा विद्या पढ़ने और मेरे पढ़ाने का कोई विस्तार न हो सकेगा, और यदि ऐसा न हुआ तो देश का उद्धार न हो सकेगा,

(दयानन्द शान्त भाव से गुरु आज्ञा को विचारने लगे)

दयानन्द—(स्वगत) गुरु आज्ञा यद्यपि कोई हंसी खेल नहीं पर इसे तो पालन करना ही होगा। (प्रगट)

आदरणीय गुरु जी आप की आज्ञा ———— ।

वृजानन्द—(बात काट कर) हां हां दयानन्द मेरी आज्ञा, कहो, कहो, तुम क्या कहना चाहते थे ।

दयानन्द—गुरु जी पालन करूंगा ।

वृजानन्द—बेटा दयानन्द तेरा कल्याण हो । प्रिय वत्स ! दयानन्द तेरा कल्याण हो, तूने आज इस नेत्र हीन साधू को पूर्ण रोशनी प्रदान कर दी, पुत्र तू जगत विजयी हो, तुझे संसार प्रणाम करेगा, तू भारत का कल्याण करेगा, इस का ताप हरेगा, तो प्रभु, वह दीन दयाल तुझे भव सागर से पार करेगा, संसार की कुरीतियों को मिटा डालो, जो निद्रा में पड़े हों उन्हें जगा डालो, अज्ञानता की जड़ों को ही जगत से मिटा डालो, ऐसी धूम तुम विश्व भर में मचा डालो, यह ऋषि भूमि है यहां से अविद्या का नाश हो जाये, इसी से विश्व भर में वेद का प्रकाश हो जाये ।

जाओ दयानन्द जाओ और अपने तीनो गुरु भाईयों को भी साथ ही लेते जाओ संसार के चारों भागों में एक एक निकल जाओ और वेद का डंका बजा दो ।

दयानन्द—गुरु जी आपका आर्शीवाद प्राप्त करके मैं कृत कृत हो गया, मैं संसार के कल्याण के लिये अपना यह जीवन न्यौछावर कर दूंगा ।

वृजानन्द—(अपने शेष शिष्यों से) कहो बच्चो तुम क्या कहते हो।

सब—गुरु जी हम भी यथा शक्ति अपने २ स्थानों में वेद प्रचार करेंगे, हमारी इतनी ही शक्ति है इसी के अनुसार उद्धार करेंगे।

वृजानन्द—बस इसी को कहते हैं चतुराई, इसीलिये तुमने मुझसे शिक्षा थी पाई। तुम्हें यह कहते हुवे लज्जा क्यों नहीं आई, यही है तुम्हारी कम समझी और स्वार्थ भरी ढ़ठाई।

एक शिष्य—यह आज्ञा आपकी महान है और हम नीम जान हैं।

दूसरा—हमारी शक्ति से वाहर है हमसे न पाली जायेगी, विश्व की सेवा करें हम, कैसे संभाली जायेगी।

तीसरा—आपका कहना सत्य तथा अत्यावश्यक है संसार कीअवस्था बहुत ही बेढव है परन्तु गुरु जी महाराज हम तो बिलकुल असमर्थ हैं। हां गृहस्थ जीवन को भोग लेने के अनन्तर हम जब वानप्रस्थी हो जायेंगे, तो फिर कुछ अधिक कर पायेंगे।

वृजानन्द—शोक। महा शोक। तुम्हारे पढ़ने और मेरे पढ़ाने पर शोक, भारत वर्ष का नाश तो अब हो रहा है और तुम्हे अपने जीवन का आनन्द भोग भोगने का विचार हो रहा है, जाओ विलासीयो जाओ, मुझे तो तुम से पहिले से ही कोई आशा न थी। (तीनों भागते हैं)

दयानन्द—पूज्य गुरु जी। उदास न हों

मेरी जिव्हा में शक्ति इतनी भर दी है प्रभु के आप ने।
शेष कुछ थी तो पूरी करदी शिक्षा ले आप ने॥
इसलिये सन्देश वेद का अब मै घर घर सुना दूंगा।
असत्य पथ जगत सारे से अब मैं जा कर मिटा दूंगा॥

वृजानन्द—दयानन्द। क्या सत्य कहते हो?

दयानन्द—सत्य भगवन, सत्य।

वृजानन्द—तुम्हारे तीन गुरुभाई जिन पर मुझे कुछ थोड़ा सा भरोसा था वह तो दिल छोड़ गये, दम तोड़ गये।

दयानन्द—

मैं काम सब कर लूंगा कृपा से आप की अकेला ही
लोग तो देखने आते हैं यहां सब मेला ही
मुझे तो धुन है बस अब वेद का प्रचार करने की
जो बिगड़ी हालत है देश की उसका सुधार करने की

वृजानन्द—प्रिय वत्स। जानते हो यह मार्ग…

दयानन्द—बड़ा विकट है, चारों ओर संकट ही संकट हैं

वृजानन्द—हां-चारों ओर महान काली रात है भयंकर जंगल और भयानक जंगली पशुओं की भान्ति का मनुष्य इस में वास कर रहा है। वह पग २ पर इस कार्य में रुकावटें डालेंगे।

दयानन्द—गुरु जी आपका आर्शीवाद साथ है, तो इन कष्टों की क्या बसात है।

वृजानन्द—

दयानन्द गर्व जितना करूं तुझ पर उतना ही थोड़ा है।
तू तो सचमुच ही पाखंड खंडन के लिये इक हतौड़ा है॥
जाओ संसार क्षेत्र में जाओ ईश्वर तुम्हारे सहायक हों।
बिगड़े हुवे काज सब सुधरें, मार्ग सभी सुखदायक हों॥

दयानन्द—प्रणाम भगवन।

वृजानन्द—(हाथ उठा कर) कल्याण हो।

(दयानन्द का चलना)

पटाक्षेप

विद्यार्थी

यह एक मासिक पत्रिका के रूप में आप की सेवा में आने की इच्छा रखता है, इसे अपनाईये।

विद्यार्थी की विशेषतायें

विद्यर्थी प्रत्येक बालक बालिका, युवक युवती और उससे भी बड़े प्रत्येक विद्या प्रेमियों के लिये परम मित्र और स्नेह का भन्डार सिद्ध होगा। जो इसको अपनाएंगे, वह इसकी विभूतियों से लाभ प्राप्त करेंगे।

विद्यार्थी उत्तम सामग्री प्रस्तुत करेगा। वह अश्लीलता का तृस्कार करेगा—धर्म कर्म, लेख, कविता, नाटक कहानी, छात्र अवस्था में परिक्षाओं के समय परम उपयोगी, तथा चरित्र का निर्माता होगा।

रिफामर प्रेस देहली में छपा